दिनांक 18 मई ।गोरखपुर ।

## कथा

श्री गोरखनाथ मंदिर में मूर्ति प्राण - प्रतिष्ठा के अवसर पर आयोजित सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान-यज्ञ के चौथे दिवस के अवसर कथा व्यास डॉ॰ श्यामसुन्दर पाराशर जी ने भक्त ध्रुव की कथा सुनाते हुए कहा कि हम सभी लोग उत्तानपाद हैं, हम सबकी दो रानियां है बुद्धिमानी और मनमानी। हम प्रशंसा भले हीं बुद्धिमानी की करें किंतु काम सभी मनमानी से ही करते है, इसी प्रकार राजा उत्तानपाद की दो रानियां सुनीति और सुरुचि थी, पर राजा उत्तानपाद सुरुची को अधिक प्रेम करते थे। सुनीति के पुत्र ध्रुव को पिता के पास जाने की इच्छा हुई, वे गए और  पिता की गोद में जाकर बैठे , यह देख कर सुरुचि ने उनका हाथ पकड़कर हटा दिया और कहा कि जाकर पहले तपस्या करो और मेरे गर्भ से पैदा होवो, तब पिता के गोद में बैठने के अधिकारी बनोगे । यह सुनकर ध्रुव की माता सुनीती ने ध्रुव को समझाया और कहा कि बेटे इस पिता की गोद से अच्छा परमपिता के गोद को प्राप्त करो। इस पर ध्रुव ने नारद मुनि के बताये मन्त्र से 5 महीने की तपस्या की और भगवान उनको दर्शन दिए । जैसे ध्रुव ने माता सुनीति की बात मानकर भगवान को प्राप्त किया ,उसी प्रकार से हम सभी अपनी बुद्धिमानी की बात मानकर भगवान का भजन कर उनको प्राप्त कर सकते हैं।

कथा व्यास ने कहा कि जीव जब भव चक्र में भटक जाता है तब भगवान ही संत व सद्गुरुदेव के रूप में आकर सही मार्ग बताकर उसे भवचक्र से पार लगाते हैं। जीव पुरंजन  के रूप में होता है किंतु सदगुरु के उपदेश से अपना स्वरूप पहचानता है।

भारत वर्ष का वर्णन करते हुए कथा व्यास ने कहा कि भारत वर्ष में तीन भरत हुए हैं। एक ज्ञानयोग ,दूसरे कर्मयोग और तीसरे भक्ति योग की साक्षात मूर्ति हैं। इन्ही के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा है। भारत उत्सवों का देश है, जब हम उत्सव मनाते हैं तो देवताओं को जलन होती है कि हमें यह सौभाग्य क्यों नहीं मिला। भारत ही ऐसा देश है जहां साधु, संत ,महंत, जगतगुरु आदि का दर्शन करने को मिलता है  इनके दर्शन मात्र से यह शरीर लोहे से सोना बन जाती है। संत पारस मणि होते हैं, उनके स्पर्श मात्र से हमारी लोहे जैसी शरीर स्वर्ण हो जाती है किंतु देवों की शरीर चांदी जैसी होती है, उन्हें यह पारस जैसे संत समागम का लाभ नहीं मिल पाता। इसीलिए तुलसीदास जी ने भी कहा है" बड़े भाग्य मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन गावा।"

कथा व्यास ने कहा कि जीवन में जब भगवान कि भक्ति रूपी सूर्य का उदय होता है तब जीवन के सभी अंधकार दूर हो जाते है।

अजामिल की कथा सुनाते हुए कथा व्यास ने कहा कि वस्तु की शक्ति ज्ञान की अपेक्षा नहीं करती, उस वस्तु का ज्ञान हो या न हो। जैसे बिजली के तार में करंट धोखे से भी छूने पर जान ले लेता है वैसे हीं भगवान के नाम की शक्ति भी ज्ञान की अपेक्षा नहीं करती , धोखे से भी मरते समय यदि भगवान का नाम ले लिया, तो उसे बैकुंठ की प्राप्ति होती है। अजामिल ने मरते समय यमदूतों को देखकर भय से अपने बेटे नारायण को बुलाया तो भगवान् विष्णु के पार्षद आकर उसे बैकुंठ ले जाते हैं।

परमात्मा ने हमें जो सुर दुर्लभ मानव शरीर दिया है, उसके लिए हम यदि उनका नाम न लें, उन्हें धन्यवाद न करें तो हम से बड़ा  कृतघ्न कोई नहीं। ऐसे कृतघ्नों का प्राण लेने के लिए यमदूत आते हैं और यातनाएं देते हैं।

उन्होंने कहा कि अन्य सभी धर्मों के लोग अपने धर्म ग्रन्थों को जिस भाषा में लिखा है उसी भाषा में पाठ करते हैं, किंतु हमारे सनातनी लोग धर्म ग्रंथों को हिंदी भाषा में पढ़ना चाहते हैं। इसलिए हम सभी सनातनी लोगों को थोड़ी बहुत संस्कृत

जाननी चाहिए क्योंकि बिना संस्कृत के ज्ञान के हम अपने धर्मग्रन्थों को भी नहीं पढ़ सकते।

श्रीमद्भागवत के छठे स्कन्ध के नारायण कवच के पाठ की महिमा बताते हुए उन्होंने कहा कि हमारे जीवन का सुरक्षा कवच है उसका नित्य पाठ करना चाहिए, यदि हम इसका रोज पाठ करें तो कोई रोग हमें न हो। उन्होंने बताया कि कोरोना काल में हमने नारायण कवच का पाठ कराकर के अपने साथ-साथ बहुत से लोगों के प्राण की रक्षा करवाई। यही नहीं इसके पाठ से भूत-प्रेत भी आपका कुछ नहीं कर पाते।

उन्होंने कहा कि हम किसी भी उपाय से भगवान् से जुड़ जायें, चाहे मित्र बनाकर अथवा शत्रु बनाकर। जुड़ने मात्र से भगवान् की कृपा प्राप्त होती है।

कथाव्यास ने कहा कि अभिमान खूब करो किन्तु अपने पद व सम्पत्ति का नहीं, अपितु भगवान् की कृपा का करो, क्योंकि उनकी कृपा के बिना हमारा कुछ नहीं होता। ऐसा अभिमान भी सार्थक हो जाता है।

भगवान कहते हैं कि भक्तों को पुकारने में देर होती है किन्तु मुझे दौड़ कर आने में देर नहीं होती।

उन्होंने कहा कि हमें अपने धर्म की रक्षा करने के लिए शास्त्र और शस्त्र दोनों की आवश्यकता है। आज अपने शास्त्रों का ज्ञान न होने से कोई भी हमें व हमारी सन्तानों को मूर्ख बनाकर हमारा नुकासान कर देता है। हमें पहले शास्त्र ज्ञान से व्यवहार करना चाहिए, यदि उससे कोई न माने तो शास्त्र की जगह शस्त्र का प्रयोग करना चाहिए। हमारे सभी देवी-देवता भी शस्त्र से दुष्टों का संहार करते हैं।

कथा व्यास ने वामन अवतार की कथा सुनाते हुए कहा कि जो अपने जीवन का भी दान कर दे, उसी क नाम बलिदान है। राजा बलि ने भगवान् वामन को दोनों लोक दान करने के बाद तीसरे पग में अपने जीवन का भी दान कर दिया। इसलिए यह दान सबसे बड़ा दान कहा गय है। कोई देश के लिए अपना बलिदान करता है तो कोई भगवान् के चरणों में। दोनों महादान होता है।

उन्होंने राम अवतार का भी वर्णन किया और भजन " सीताराम जी की प्यारी रजधानी लागे, मोहे मीठो मीठो सरजू जी को पानी लागे" गाकर भक्तों को खूब झूमाया।

कथा का समापन आरती व प्रसाद वितरण से हुआ। संचालन डॉ॰ अरविन्द चतुर्वेदी ने किया।

कथा में गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, कटक ओडिसा से योगी शिवनाथ, महन्त रवीन्द्र दास, वाराणसी से सन्तोषदास सतुआबाबा, देवीपाटन से महन्त मिथिलेश नाथ, योगी रामनाथ, यजमान मयंक अग्रवाल, प्रदीप जोशी, अवधेश सिंह, अजय कुमार सिंह, डॉ शिव शंकर शाही व बड़ी संख्या में कथाप्रेमी उपस्थि।